ग्रामीण पर्यटन से रोज़गार सृजन

– अविनाश मिश्रा एवं मधुबंती दत्ता

भारत वैभवशाली विरासत और प्रकृति के असीम वरदान के लिए विख्यात है। साथ ही, यहां कई अद्भुत स्थान हैं जो विश्व में 'भारत के गौरव' का प्रतीक माने जाते हैं। पर्यटन के माध्यम से स्वदेशी उत्पादों का विकास और प्रचार–प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों में आमदनी और रोज़गार बढ़ा सकता है और स्थानीय समुदायों, युवाओं और महिलाओं को सशक्त बना सकता है। पात्र व्यक्तियों को आवश्यक व्यावसायिक कौशल द्वारा विधिवत योग्यता प्रदान करने और सक्षम बनाने के उद्देश्य से व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए जिससे वे पर्यटन उद्योग में 'विरासत टूर गाइड' के रूप में नौकरी कर सकें। प्रमाणित गाइड लाइसेंस पर्यटकों की नज़र में पर्यटक गाइड की विश्वसनीयता को और अधिक बढ़ाएगा, देश में आने वाले पर्यटकों के समग्र अनुभव को बढ़ाएगा और पर्यटन उद्योग में रोज़गार के अवसर पैदा करेगा जिससे आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य साकार होगा।

भारत दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक है जो विविधरूपी सांस्कृतिक आयामों के अनुभव प्रदान करती है। देश में एक समृद्ध विरासत और अनेक आकर्षण मौजूद हैं। यह हिमाच्छादित हिमालय की चोटियों से लेकर दक्षिण के उष्ण कटिबंधीय वर्षा वनों तक 32,872,263 वर्ग किलोमीटर में फैला है[1]। यह दुनिया का सातवां सबसे बड़ा देश है जो पहाड़ों और समुद्र द्वारा एशिया के शेष भागों से अलग है और देश को एक विशिष्ट भौगोलिक पहचान प्रदान करता है। यह एक अभूतपूर्व पर्यटन स्थल है जो आगंतुकों को विविध अनुभव प्रदान करता है। भारत में सैकड़ों वर्ष पूर्व स्थापित विभिन्न विरासत सम्पदाएं हैं जिनमें विशाल धरोहर स्थलों से लेकर अंडमान तथा निकोबार और लक्षद्वीप में नैसर्गिक समुद्र तट शामिल हैं।

पर्यटन आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। पर्यटन उद्योग, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, दोनों तरह से रोज़गार पैदा करता है। इसके तीव्र विकास के साथ आलीशान पर्यटन होटलों में, उच्च कौशल प्राप्त और प्रशिक्षित प्रबंधकों से लेकर अर्ध–कुशल श्रमिकों तक के, रोज़गार अवसरों में वृद्धि हुई है। पर्यटन भारत जैसे देश में सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक क्षेत्रों में गिना जाने लगा है जो महत्वपूर्ण राष्ट्रीय आय अर्जित करता है और रोज़गार के प्रचुर अवसर पैदा करता है।

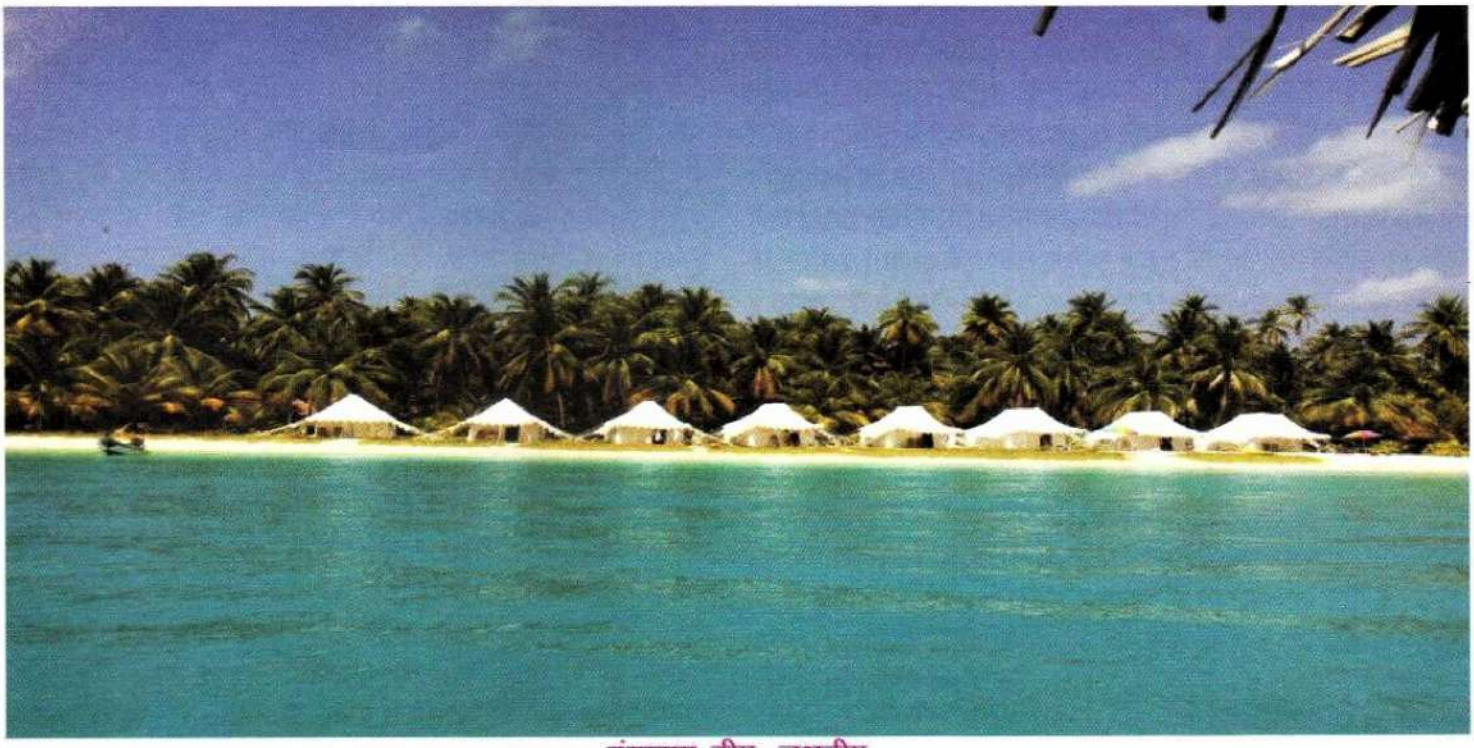

बंगाराम द्वीप, लक्षद्वीप

1 भारत पर्यटन सांख्यिकी, 2019

विजय बुक & स्टेशनरी
काटजू हॉस्पिटल से टी.टी.नगर
स्टेडियम रोड,भोपाल
मो.9926320348

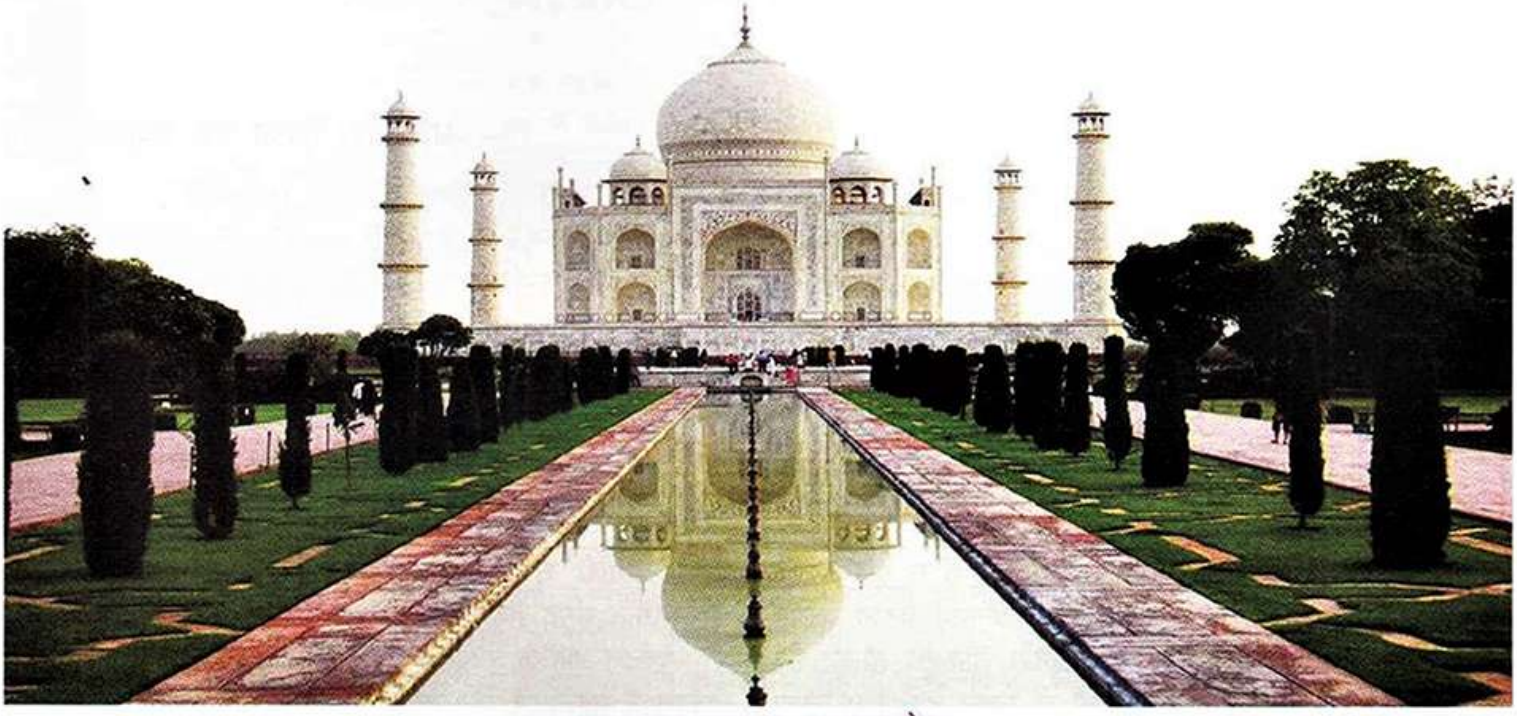

ताजमहल, आगरा, उत्तर प्रदेश

यह देश का सबसे तेजी से बढ़ने वाला सेवा उद्योग बन गया है जिसमें विस्तार और विविधीकरण की उत्कृष्ट सम्भावनाएं हैं।

पर्यटन–आर्थिक विकास का उत्प्रेरक

'स्वदेश दर्शन' योजना के तहत पर्यटन मंत्रालय योजनाबद्ध और प्राथमिकता के आधार पर देश में विषयगत पर्यटन सर्किट विकसित कर रहा है। योजना के तहत विकास के लिए 15 विषयगत सर्किटों की पहचान की गई है, पूर्वोत्तर सर्किट, बौद्ध सर्किट, हिमालय सर्किट, तटीय सर्किट, कृष्ण सर्किट, रेगिस्तान सर्किट, जनजातीय सर्किट, इको सर्किट, वन्य जीवन सर्किट, ग्रामीण सर्किट, आध्यात्मिक सर्किट, रामायण सर्किट, हेरिटेज सर्किट, सूफी सर्किट और तीर्थंकर सर्किट। पर्यटन मंत्रालय ने पर्यटन को स्थायी रूप से बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। इसने पर्यटन के बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए स्वदेश दर्शन और प्रसाद योजनाएं शुरू की गई हैं। विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों, राज्य सरकारों और शहरी स्थानीय निकायों के सहयोग से देश में 17 प्रतिष्ठित स्थलों को विकास के लिए चिन्हित किया गया है।

मंत्रालय ने विरासत स्थलों, स्मारकों और अन्य पर्यटक आकर्षणों पर आगंतुक सुविधाओं के सुधार और उनके रखरखाव के उद्देश्य से "एक विरासत अपनाएं–अपनी धरोहर अपनी पहचान" परियोजना भी शुरू की है। एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि 171 देशों के नागरिकों के लिए पांच उपश्रेणियों में ई–वीज़ा का प्रावधान है, जैसे–पर्यटक वीज़ा, ई–बिज़नेस वीज़ा, ई–मेडिकल वीज़ा, ई–मेडिकल अटेंडेंट वीज़ा और ई–कॉन्फ्रेंस वीज़ा[2]।

नीति आयोग ने देश में कुछ चिन्हित द्वीपों के समग्र विकास का कार्य हाथ में लिया है। अंडमान और निकोबार में चार द्वीपों के लिए अंतिम स्थल संभाव्यता विकास रिपोर्ट तैयार की गई है, अर्थात् स्मिथ, रॉस, लॉन्ग और एव्स द्वीप समूह, और लक्षद्वीप में पांच द्वीप, अर्थात् मिनिकॉय, बांगरम, टिन्नाकारा, चेरियम और, सुहेली द्वीप समूह। पर्यटन आधारित परियोजनाओं की पहचान अंडमान और निकोबार के लांग, एव्स, स्मिथ और नील द्वीप और लक्षद्वीप के मिनिकॉय, कदमत और सुहेली द्वीप समूह में की गई है। स्वदेश दर्शन योजना के तटीय विषयक सर्किट के तहत अंडमान और निकोबार में तटीय सर्किट (लॉन्ग द्वीप–रॉस स्मिथ द्वीप–नील द्वीप – हैवलॉक द्वीप–बाराटांग द्वीप–पोर्ट ब्लेयर) का विकास देश में द्वीप पर्यटन के विकास के लिए लागू किया गया है[3]।

लक्षद्वीप में विशाल पारिस्थितिकी पर्यटन और मत्स्य पालन क्षमता को देखते हुए भारत इस क्षेत्र की नाजुक और संवेदनशील जैव विविधता को जोखिम में डाले बिना पारिस्थितिकी पर्यटन और सतत मत्स्य पालन के लिए एक आदर्श मॉडल बन सकता है। विभिन्न पहलें जैसे समुद्र के भीतर ऑप्टिकल फाइबर कनेक्टिविटी, हवाई अड्डे का विस्तार, बुनियादी ढांचे का उन्नयन और कई द्वीपों पर जल महल (वॉटर विला) बनाने की योजना सराहनीय प्रयासों के उदाहरण हैं। बड़े पैमाने पर समुद्री शैवाल की खेती मत्स्य पालन क्षेत्र को आधुनिक बनाने का प्रयास है। इसके अलावा, जैविक नारियल तेल और जूट के उत्पादन को बढ़ाने के लिए भी कदम उठाए जा रहे हैं[4]।

2 पर्यटन मंत्रालय, 03 फरवरी, 2020, पसूका, दिल्ली
3 पर्यटन मंत्रालय, 07 जनवरी, 2019, पसूका, दिल्ली
4 उपराष्ट्रपति सचिवालय, 01 जनवरी, 2022, पसूका, दिल्ली

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में विदेशी पर्यटकों को लुभाने के लिए बहुत कुछ है। कला, शिल्प और संस्कृति में समृद्ध ग्रामीण भारत में एक पर्यटक आकर्षण का केंद्र बनने की पूरी सम्भावना है। यदि ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा का बेहतर ढंग से प्रचार–प्रसार किया जाता है तो विकसित देशों के वासी, विशेष रूप से युवा पीढ़ी जिन्हें पारंपरिक जीवनशैली, कला और शिल्प लुभाते हैं, ग्रामीण भारत की ओर खिंचे चले आएंगे।

राष्ट्रीय उद्यान जैव विविधता की आधारशिला हैं और पारिस्थितिकी तंत्र और उनके भीतर पनपने वाली वनस्पतियों के पोषण के लिए महत्वपूर्ण हैं। राष्ट्रीय उद्यान, वन्य जीवन और प्रकृति आधारित पर्यटन के साथ, भारतीय अर्थव्यवस्था को बहुत मज़बूती प्रदान करते हैं।

आर्थिक लाभों के अलावा, पर्यटन ने भारतीय नागरिकों और अन्य देशवासियों के बीच सांस्कृतिक संपर्क को बढ़ावा दिया है और क्षेत्रीय सहयोग को मज़बूती प्रदान की है। इस क्षेत्र ने भारत की सॉफ्ट पॉवर (बौद्धिक एवं सांस्कृतिक शक्ति) को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विश्व–स्तर पर यात्रा और पर्यटन उद्योग सबसे तेजी से बढ़ते उद्योगों में से एक है। 2019 में 2.5 प्रतिशत की वैश्विक आर्थिक विकास दर की तुलना में इस उद्योग की विकास दर 3.5 प्रतिशत रही। इस क्षेत्र ने वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 10.4 प्रतिशत का योगदान दिया। दुनिया भर में इस क्षेत्र में 330 मिलियन कर्मी रोज़गार में लगे और यह वैश्विक सेवाओं के निर्यात का 27.4 प्रतिशत भाग बना। हालाँकि कोविड–19 का विश्व भर के यात्रा उद्योग पर दुष्प्रभाव पड़ा है। वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में इस क्षेत्र के योगदान और रोज़गार में क्रमशः 49 प्रतिशत और 19 प्रतिशत की गिरावट आई है[6]।

पर्यटन क्षेत्र देश के विदेशी मुद्रा भंडार में अत्यधिक योगदान देता है और औपचारिक और अनौपचारिक दोनों क्षेत्रों में रोज़गार के अवसर प्रदान करता है। 2019 में यह क्षेत्र कुल रोज़गार का 8.8 प्रतिशत, कुल निर्यात का 5.8 प्रतिशत और सकल घरेलू उत्पाद का 6.9 प्रतिशत भाग था[7]। लेकिन अब यह क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद में केवल 4.7 प्रतिशत, कुल रोज़गार में 7.3 प्रतिशत और कुल निर्यात में 2.5 प्रतिशत का योगदान देता है[7]। सेवा क्षेत्र का भारतीय अर्थव्यवस्था में 55 प्रतिशत योगदान पर्यटन उद्योग को देश के समग्र आर्थिक विकास के लिए और भी महत्वपूर्ण बना देता है।

विविध संस्कृति और समृद्ध स्थापत्य विरासत के बावजूद भारत के पास स्पेन (5.7%), यूएसए (5.4%), चीन (4.5%), यूके (2.7%) और थाईलैंड (2.7%) की तुलना में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन बाज़ार का केवल 1.2 प्रतिशत भाग है (2019)[8]। यूके और यूएसए जैसे देशों में क्रमशः केवल 34 और 24 विश्व धरोहर स्थल हैं लेकिन पर्यटन से उनकी विदेशी मुद्रा आय भारत की तुलना में बहुत अधिक है जहां 40 विश्व धरोहर स्थल हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में भारत को विशिष्ट पर्यटन, आरोग्य पर्यटन, साहसिक पर्यटन और आध्यात्मिक पर्यटन जैसे विभिन्न पर्यटन क्षेत्रों को बढ़ावा देने और प्रचार–प्रसार के लिए नवीन दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। यह देखते हुए कि भारत घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के बीच सदियों से आध्यात्मिक पर्यटन के गंतव्य स्थल के रूप में जाना है, हमें आध्यात्मिक पर्यटन की क्षमता को उजागर करना चाहिए।

पर्यटन का महत्व

विश्व के अधिकांश स्थानों में पर्यटन आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण स्रोत है। कई देशों ने पर्यटन की क्षमता का पूरी तरह से उपयोग करके अपनी अर्थव्यवस्थाओं को संपन्न बना दिया है। पर्यटन में बड़े पैमाने पर उत्पादक रोज़गार पैदा करने की क्षमता है जो विभिन्न प्रकार के हैं जैसे अत्यधिक कुशल से लेकर अर्ध–कुशल तक। पर्यटन के क्षेत्र में कई दशकों से विकास और विविधता आई है जिसके कारण यह सबसे तेजी से बढ़ते आर्थिक क्षेत्रों में से एक बन गया है।

समकालीन पर्यटन का आर्थिक विकास और सामाजिक–आर्थिक विकास से गहरा संबंध है। वर्तमान में, पर्यटन का एक वाणिज्यिक परिमाण भी है जो तेल निर्यात, खाद्य पदार्थों और वाहनों के समकक्ष है या उससे अधिक है। पर्यटन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में आवश्यक प्रतिभागियों में गिना जाने लगा है और कई विकासशील देशों के लिए आय के प्राथमिक स्रोतों में से एक बन गया है। इस विस्तार के साथ पर्यटन गंतव्य स्थलों का विविधीकरण हुआ है और प्रतिस्पर्धात्मकता में भी वृद्धि हुई है। आर्थिक संचालक के रूप में पर्यटन उद्योग का बढ़ता महत्व और विकास तथा साधन के रूप में इसकी क्षमता निर्विवाद है। यह न केवल विकास को गति देता है बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रोज़गार पैदा करके लोगों के जीवन में सुधार भी लाता है। यह समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पर्यावरणीय स्थिरता और अंतर्राष्ट्रीय शांति को बढ़ावा देता है।

भारत में पर्यटन अधिकतर चंद पारंपरिक शहरों और कस्बों तक सीमित रहा है जो ऐतिहासिक, स्थापत्य और सांस्कृतिक अभिरूचि के केंद्र हैं। बुनियादी ढांचे और संचार साधनों की कमी और प्रतिबंधात्मक नीतियों के कारण कई शानदार स्थल अज्ञात हैं या कम खोजे गए हैं। भारत में लगभग हर क्षेत्र के अपने नयनाभिराम स्थल हैं जिन्हें पर्यटन के लिए विकसित करने और बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इसके लिए एक समग्र कार्यनीति और देश भर में एक समान नीति निष्पादन की आवश्यकता है। इसके अलावा, हमें इन सभी क्षेत्रों को व्यवस्थित तरीके से विकसित करने के लिए, राज्य और केंद्र दोनों से, योजना और वित्तीय सहायता की आवश्यकता है। अब 'ग्रामीण पर्यटन' पर ध्यान देने की ज़रूरत है जो पर्यटन क्षेत्र की प्रगति का भविष्य है।

6 विश्व यात्रा एवं पर्यटन परिषद भारत रिपोर्ट 2021

7 विश्व यात्रा एवं पर्यटन परिषद भारत रिपोर्ट 2021

8 भारत पर्यटन सांख्यिकी एक नज़र में 2021

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर, राजस्थान

ग्रामीण पर्यटन पर विशेष फोकस

दुनिया भर में पर्यटन उद्योग की अभूतपूर्व प्रगति को देखते हुए भारत सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई नीतिगत पहलों को लागू किया है। "अतुल्य भारत" को विश्व स्तर पर एक आकर्षक पर्यटन गंतव्य बनाने के लिए नए पर्यटन साज़ो–सामान और पैकेज जैसे व्यापार पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, तीर्थ पर्यटन, साहसिक पर्यटन और सतत पर्यटन विकसित किए जा रहे हैं।

भारत का ग्रामीण क्षेत्र कला एवं शिल्प, संस्कृति और प्राकृतिक धरोहर पर केंद्रित विभिन्न जीवनशैलियों का एक अछूता खजाना है। पिछले कुछ दशकों में देश के पर्यटन उद्योग में तेजी से वृद्धि हुई है लेकिन ग्रामीण पर्यटन पर कभी भी पूरा ध्यान नहीं दिया गया है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में विदेशी पर्यटकों को लुभाने के लिए बहुत कुछ है। कला, शिल्प और संस्कृति में समृद्ध ग्रामीण भारत में एक पर्यटक आकर्षण का केंद्र बनने की पूरी सम्भावना है। यदि ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा का बेहतर ढंग से प्रचार–प्रसार किया जाता है तो विकसित देशों के वासी, विशेष रूप से युवा पीढ़ी जिन्हें पारंपरिक जीवनशैली, कला और शिल्प लुभाते हैं, ग्रामीण भारत की ओर खिंचे चले आएंगे।

पर्यटन मंत्रालय ने देश में विकास के लिए ग्रामीण पर्यटन को आला पर्यटन क्षेत्रों में से एक के रूप में घोषित किया है। मंत्रालय ने ग्रामीण पर्यटन के लिए एक राष्ट्रीय कार्यनीति मसौदा और रोडमैप विकसित किया है जो पर्यटन के माध्यम से स्थानीय उत्पादों को विकसित करने और प्रोत्साहन देने पर केंद्रित है। परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में आय और रोज़गार का सृजन होता है जो स्थानीय समुदायों, युवाओं और महिलाओं को आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने में सक्षम बनाता है।

देश में ग्रामीण पर्यटन की क्षमता को देखते हुए पर्यटन मंत्रालय ने ग्रामीण सर्किट को स्वदेश दर्शन योजना के तहत विकास के लिए पंद्रह विषयगत सर्किटों में से एक के रूप में चुना है। इसके पीछे मंत्रालय की मंशा पर्यटन को ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने के साधन के रूप में प्रयोग करना और घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को देश के ग्रामीण पहलुओं से रूबरू कराना है।

देश में स्वदेश दर्शन के ग्रामीण सर्किट विषय के तहत पर्यटन मंत्रालय द्वारा स्वीकृत परियोजनाओं में शामिल हैं–गांधी सर्किट का विकासः भितिहरवा चंद्रहिया–तुरकौलिया (बिहार) और मालानाड मालाबार क्रूज़ पर्यटन परियोजना (केरल) का विकास[9]।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए तैयार की गई राष्ट्रीय कार्यनीति और रोडमैप आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक प्रमुख पहल है। कार्यनीति दस्तावेज़ निम्नलिखित प्रमुख स्तंभों पर केंद्रित हैः

9 लोकसभा अतारांकित प्रश्न संख्या 4005 जिसमे श्री बी.बी. पाटिल ने ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आवंटित धनराशि के बारे में पूछा था, का 28.03.2022 को श्री जी. किशन रेड्डी, पर्यटन मंत्री, भारत सरकार द्वारा उत्तर

- ग्रामीण पर्यटन के लिए आदर्श नीतियां और सर्वोत्तम कार्य प्रणालियां;
- ग्रामीण पर्यटन के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियां और प्लेटफार्म;
- ग्रामीण पर्यटन के लिए कलस्टर विकसित करना;
- ग्रामीण पर्यटन के लिए विपणन सहायता;
- हितधारकों का क्षमता निर्माण;
- शासन और संस्थागत ढांचा।

पर्यटन मंत्रालय ने अब पर्यटन और गंतव्य केंद्रित दृष्टिकोण के साथ स्थायी व उत्तरदायी स्थलों को विकसित करने के लिए अपनी 'स्वदेश दर्शन' योजना में सुधार किया है।

पर्यटन विकास के लिए सरकार को ग्रामीण भारत में कुछ महत्वपूर्ण मापदंडों के आधार पर राज्यों की सहायता और मार्गदर्शन पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है:

- हवाई / रेल / सड़क कनेक्टिविटी–अंतिम छोर तक कनेक्टिविटी के लिए।
- **बुनियादी ढांचे का विकास**–भरोसेमंद फ्रिक्वेंसी पर आधुनिक बसें और स्टेशन, टैक्सी / साझा गतिशीलता–गाइड, पार्किंग / चार्जिंग / ईंधन भरने, साइन बोर्ड और सूचना कियोस्क का ऐप आधारित एकीकरण।
- किसी गंतव्य स्थान में धरोहर स्थलों की पहचान करना और उन्हें जोड़ना।
- अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाओं में संकेतक जैसी सुविधाएं।
- **कर सम्बन्धी मुद्दे**–पर्यटक वाहनों के लिए एक भारत, एक कर प्रणाली पर्यटकों को कराधानों से बचाती है।
- ठहरने और कार्यस्थलों की सुविधाओं के अनुरूप रिसॉर्ट्स में होमस्टे और उच्च श्रेणी के ब्रांडेड होटल के कमरों को बढ़ावा देना।
- भारतीय और विदेशी पर्यटकों के लिए स्थानीय पर्यटन उत्पादों, कलाओं और शिल्पों को बढ़ावा देने के लिए कनेक्टिविटी प्रदान करना।
- प्रचार गतिविधियों के लिए डिजिटल मीडिया (सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, सोशल मैसेजिंग) पर ध्यान केंद्रित करना।

भारत में 'ग्रामीण पर्यटन' पर विशेष ध्यान देते हुए कुछ प्रमुख बिन्दुओं को रेखांकित करने की आवश्यकता है:

- नौकरियों का सृजन, नौकरियों की बरकरारी, और व्यापार के नए अवसर
- धरोहरों और स्मारकों पर ध्यान केंद्रित करना
- संस्कृति और त्यौहार
- प्रकृति और पारिस्थितिकी पर्यटन
- कृषि पर्यटन को बढ़ावा
- अवकाश पर्यटन को बढ़ावा
- समुद्री पर्यटन को बढ़ावा
- साहसिक पर्यटन को बढ़ावा
- स्वास्थ्य और आयुर्वेद

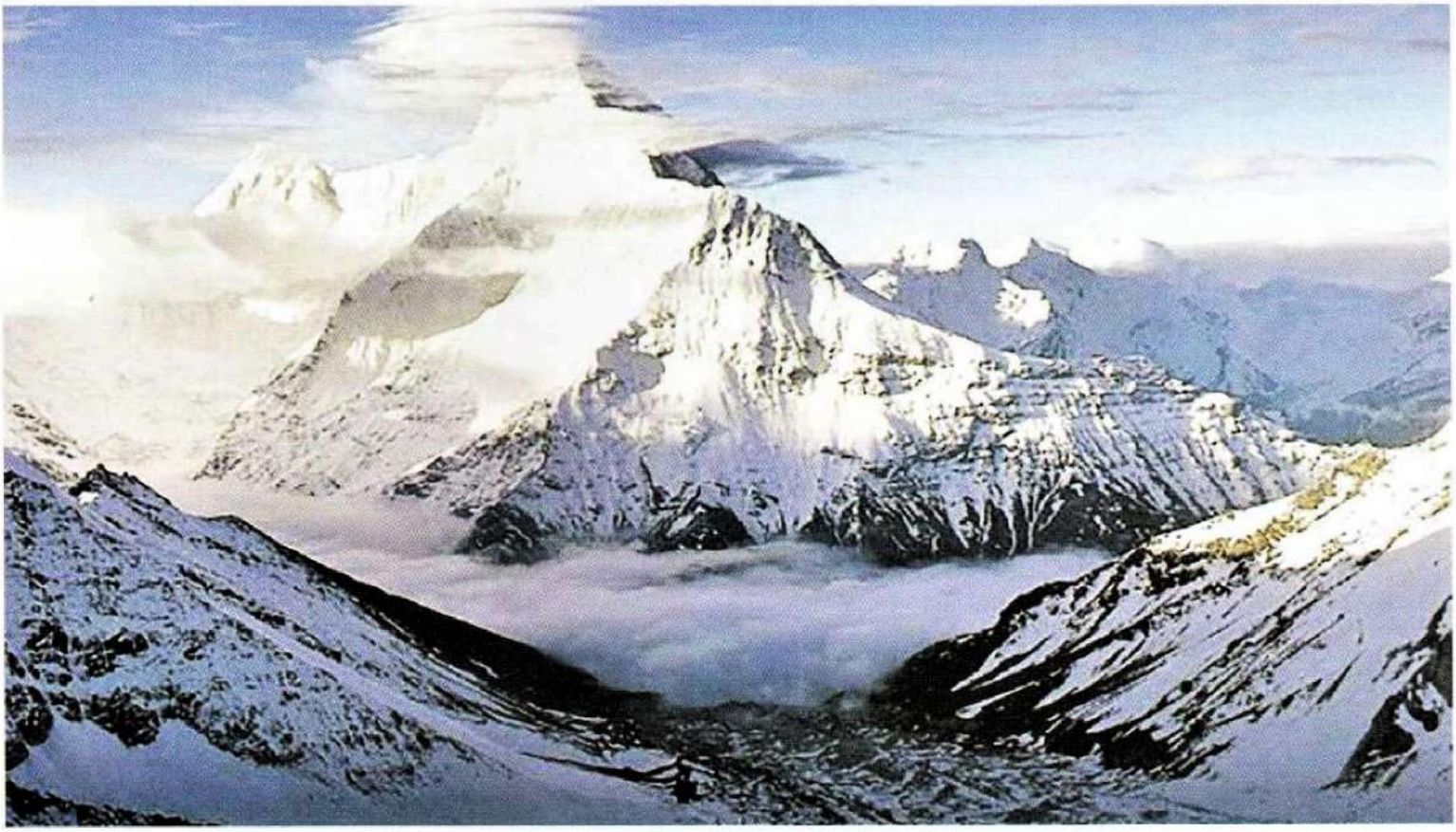

हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियां

व्हाइट सर्फ झरना, अंडमान

- जनजातीय भोजन और व्यंजन
- पक्षी अवलोकन और वन्य जीवन
- धर्म और पुराण कथाएं
- अछूती ग्रामीण संस्कृति और विरासत साधनों का सतत दोहन
- ग्रामीण पर्यटन स्थायी और ज़िम्मेवार पर्यटन का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

ग्रामीण पर्यटन विकास के लिए राष्ट्रीय योजना और रोडमैप में ग्रामीण पर्यटन को प्राथमिकता देने का प्रयास राष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है। यह गरीबी, महिला सशक्तीकरण और ग्रामीण लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार जैसे मुद्दों से निपटने के लिए विविध कार्यक्रमों को एक साथ लाने का भी इरादा रखता है। यह योजना स्थायी और ज़िम्मेवार पर्यटन के महत्वपूर्ण विषय को केंद्र में रख कर बनाई गई है जो राज्य की नीतियों और सर्वोत्तम तौर–तरीकों, डिजिटल प्रौद्योगिकियों, और ग्रामीण पर्यटन के लिए ग्रामीण पर्यटन विकास समूहों, ग्रामीण पर्यटन के लिए विपणन सुगमता, हितधारकों का क्षमता निर्माण, शासन और संस्थागत ढांचे के लिए मानदंड निर्धारण की युक्तिपूर्ण नीतियों पर आधारित है।

उपभोक्ताओं के पास डिजिटल प्रौद्योगिकियों और प्लेटफार्मों तक वैश्विक पहुंच है जिससे सेवा प्रदाताओं को पर्यटन क्षेत्र के विकास और प्रतिस्पर्धी मानकों में सुधार करने में सुगमता होती है।

डिजिटल प्रौद्योगिकियां और प्लेटफॉर्म ग्रामीण उद्यमियों को अपनी बाज़ार पहुंच और वित्तीय समावेशन में सुधार के नए अवसर प्रदान करते हैं। ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने के लिए डिजिटल उपकरणों का लाभ उठाने की समझ को बेहतर बनाने के प्रयास किए जाने चाहिए। इंटरनेट, क्लाउड कंप्यूटिंग, सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल प्रौद्योगिकियों की क्षमता का उपयोग करके ग्रामीण व्यवसाय भौगोलिक अड़चनों और वैकल्पिक विपणन चैनलों की कमी को दूर कर सकते हैं।

देश की संस्कृति, रीति–रिवाज़, शिल्प, विरासत और कृषि परम्पराएं गांवों में रची–बसी हैं। पर्यटन के माध्यम से स्वदेशी उत्पादों का विकास और प्रचार–प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों में आमदनी और रोज़गार पैदा कर सकता है और स्थानीय समुदायों, युवाओं और महिलाओं को सशक्त बना सकता है जिससे 'आत्मनिर्भर भारत' का लक्ष्य साकार होगा। यह ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन को कम करने, गरीबी की रोकथाम और सतत विकास को बढ़ावा देने में मदद करेगा।

भावी कार्ययोजना

ग्रामीण पर्यटन में अन्य आर्थिक गतिविधियों के साथ संगतता, सकल घरेलू उत्पाद और रोज़गार सृजन में योगदान के साथ–साथ स्थानीय आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन लाने की असीम क्षमता है। सरकार को भारत में ग्रामीण पर्यटन के महत्व को स्वीकार करते हुए हितधारकों को एक सतत अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए। पात्र व्यक्तियों को आवश्यक व्यावसायिक कौशल द्वारा विधिवत योग्यता प्रदान करने और सक्षम बनाने के उद्देश्य से व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए जिससे वे पर्यटन उद्योग में 'विरासत टूर गाइड' के रूप में नौकरी कर सकें। प्रमाणित गाइड लाइसेंस पर्यटकों की नज़र में पर्यटक गाइड की विश्वसनीयता को और अधिक बढ़ाएगा; देश में आने वाले पर्यटकों के समग्र अनुभव को बढ़ाएगा और पर्यटन उद्योग में रोज़गार के अवसर पैदा करेगा।

इसके अलावा, सरकार को ग्रामीण पर्यटन के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए उचित वित्तपोषण करना चाहिए और किफायती बुनियादी ढांचा मुहैया कराना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन को तभी कायम रखा जा सकता है जब एक बहु–कार्य, बहु–हितधारक भागीदारी दृष्टिकोण पर आधारित व्यापक, समावेशी योजना रणनीति को अपनाया और कार्यान्वित किया जाए।

(अविनाश मिश्रा नीति आयोग में पर्यटन एवं संस्कृति और जलवायु परिवर्तन विभाग में एडवाइज़र हैं और मधुबंती दत्ता यंग प्रोफेशनल हैं।)

ई–मेलः amishra-pc@gov.in
dutta.madhubanti@gov.in